Vol III Issue X April 2014 ISSN No :2231-5063

International Multidisciplinary Research Journal

Golden Research Thoughts

Chief Editor
Dr.Tukaram Narayan Shinde

Publisher
Mrs.Laxmi Ashok Yakkaldevi

Associate Editor
Dr.Rajani Dalvi

Honorary
Mr.Ashok Yakkaldevi

Welcome to GRT

RNI MAHMUL/2011/38595 **ISSN No.2231-5063**

Golden Research Thoughts Journal is a multidisciplinary research journal, published monthly in English, Hindi & Marathi Language. All research papers submitted to the journal will be double - blind peer reviewed referred by members of the editorial board.Readers will include investigator in universities, research institutes government and industry with research interest in the general subjects.

International Advisory Board

Flávio de São Pedro Filho
Federal University of Rondonia, Brazil

Kamani Perera
Regional Center For Strategic Studies, Sri Lanka

Janaki Sinnasamy
Librarian, University of Malaya

Romona Mihaila
Spiru Haret University, Romania

Delia Serbescu
Spiru Haret University, Bucharest, Romania

Anurag Misra
DBS College, Kanpur

Titus PopPhD, Partium Christian University, Oradea,Romania

Mohammad Hailat
Dept. of Mathematical Sciences, University of South Carolina Aiken

Abdullah Sabbagh
Engineering Studies, Sydney

Catalina Neculai
University of Coventry, UK

Ecaterina Patrascu
Spiru Haret University, Bucharest

Loredana Bosca
Spiru Haret University, Romania

Fabricio Moraes de Almeida
Federal University of Rondonia, Brazil

George - Calin SERITAN
Faculty of Philosophy and Socio-Political Sciences Al. I. Cuza University, Iasi

Hasan Baktir
English Language and Literature Department, Kayseri

Ghayoor Abbas Chotana
Dept of Chemistry, Lahore University of Management Sciences[PK]

Anna Maria Constantinovici
AL. I. Cuza University, Romania

Horia Patrascu
Spiru Haret University, Bucharest,Romania

Ilie Pintea,
Spiru Haret University, Romania

Xiaohua Yang
PhD, USA

.....More

Editorial Board

Pratap Vyamktrao Naikwade
ASP College Devrukh,Ratnagiri,MS India

R. R. Patil
Head Geology Department Solapur University,Solapur

Rama Bhosale
Prin. and Jt. Director Higher Education, Panvel

Salve R. N.
Department of Sociology, Shivaji University,Kolhapur

Govind P. Shinde
Bharati Vidyapeeth School of Distance Education Center, Navi Mumbai

Chakane Sanjay Dnyaneshwar
Arts, Science & Commerce College, Indapur, Pune

Awadhesh Kumar Shirotriya
Secretary,Play India Play,Meerut(U.P.)

Iresh Swami
Ex - VC. Solapur University, Solapur

N.S. Dhaygude
Ex. Prin. Dayanand College, Solapur

Narendra Kadu
Jt. Director Higher Education, Pune

K. M. Bhandarkar
Praful Patel College of Education, Gondia

Sonal Singh
Vikram University, Ujjain

G. P. Patankar
S. D. M. Degree College, Honavar, Karnataka

Maj. S. Bakhtiar Choudhary
Director,Hyderabad AP India.

S.Parvathi Devi
Ph.D.-University of Allahabad

Sonal Singh,
Vikram University, Ujjain

Rajendra Shendge
Director, B.C.U.D. Solapur University, Solapur

R. R. Yalikar
Director Managment Institute, Solapur

Umesh Rajderkar
Head Humanities & Social Science YCMOU,Nashik

S. R. Pandya
Head Education Dept. Mumbai University, Mumbai

Alka Darshan Shrivastava
Shaskiya Snatkottar Mahavidyalaya, Dhar

Rahul Shriram Sudke
Devi Ahilya Vishwavidyalaya, Indore

S.KANNAN
Annamalai University,TN

Satish Kumar Kalhotra
Maulana Azad National Urdu University

Address:-Ashok Yakkaldevi 258/34, Raviwar Peth, Solapur - 413 005 Maharashtra, India
Cell : 9595 359 435, Ph No: 02172372010 Email: ayisrj@yahoo.in Website: www.aygrt.isrj.net

Golden Research Thoughts
ISSN 2231-5063
Impact Factor : 2.2052(UIF)
Volume-3 | Issue-10 | April-2014
Available online at www.aygrt.isrj.net

साहित्य और अभिगम के अन्तः संबंध

प्रेमवती

नॉन कॉलेज , गुरु गोविन्द सिंह कॉलेज ऑफ कॉमर्स , दिल्ली विश्वविद्यालय, नई दिल्ली .

***सारांश* :-**

अभिगम से अभिप्राय साहित्य के दृष्टिकोण और उसकी समझ से है। अभिगम किसी भी साहित्य को समझने की कई दृष्टियाँ प्रदान करता है। बिना अभिगम के साहित्य का मूल्यांकन एवं उसका महत्व समझ पाना मुश्किल है। इसलिए साहित्य को समझने के लिए अभिगम आवश्यक है, क्योंकि किसी रचना को उसकी सम्पूर्णता में समझने के लिए उसके अन्तरनिहित विभिन्न पक्षों को समझना अति आवश्यक है। रचना के अन्तरनिहित विभिन्न बिन्दुओं का उत्कर्ष अभिगम के माध्यम से ही संभव होता हैं। जो रचना को उसके सार्वभौमिक स्तर पर समझने में उपयोगी होता है।

***प्रस्तावना* :**

आदिकाल से ही साहित्य को समझने के लिए विभिन्न मत, विचारधारा, अध्ययन पद्धतियाँ और सिद्धान्त विकसित होते चले आए हैं। जिसमें भारतीय मनीषियों के साथ–साथ पश्चिम के विद्वानों का योगदान भी रहा है। प्राचीन काल में साहित्य को समझने के लिए ऋग्वेद, उपनिषद् इत्यादि सहायक सिद्ध हुए हैं। भरतमुनि का नाट्यशास्त्र, रस, अलंकार, इत्यादि के माध्यम से भी साहित्य के प्रयोजन को समझने का प्रयास किया जाता रहा है। हिन्दी के आचार्यों ने समय–समय पर साहित्य से संबंधी विचार प्रस्तुत किये हैं। जो पाश्चात्य के विचारों से भी प्रभावित होते रहे हैं।

आधुनिक युग में साहित्य के अभिगम के रूप में कई विचारधाराएँ और सिद्धान्त पद्धतियाँ विकसित होती दिखाई देती हैं, जो साहित्य के मूल्यांकन को एक नए सिरे से व्याख्यायित करने में सहायक सिद्ध हुए हैं। हिन्दी में यथार्थवाद, आदर्शवाद, आदर्शोन्मुख्यथार्थवाद, गाँधीवाद, मार्क्सवाद, लेनिनवाद, मनोविश्लेषणवाद, अस्तित्ववाद, आधुनिकवाद एवं उत्तर–आधुनिकतावाद जैसी अध्ययन पद्धतियाँ और सिद्धान्त अवतरित हुए। इसी सिद्धान्तों के आधार पर साहित्य के अध्ययन की विभिन्न पद्धतियाँ का विकास हुआ उदाहरणस्वरूप भक्तिकालीन कविता को आचार्य रामचन्द्र शुक्ल ने 'लोकमंगलवाद' की कसौटी पर परखा और आचार्य हजारी प्रसाद द्विवेदी ने मानवतावाद की कसौटी पर परन्तु मार्क्सवादी आलोचकों ने उसे ऐतिहासिक, भौतिक द्वन्द्वात्मक, सामाजिक परिप्रेक्ष्य में देखने की कोशिश की, जिस कारण उसके मूल्यांकन के कई और नए स्तर एवं बिन्दु प्रकाश में आए। यह सब साहित्य के अभिगम के फलस्वरूप ही संभव हो सका।

1936 में 'प्रगतिशील लेखक संघ' की स्थापना हुई जिसकी अध्यक्षता मुंशी प्रेमचन्द ने की। साहित्य के क्षेत्र में प्रगतिशील विचारधारा की दृष्टि से एक नवीन अध्ययन पद्धति का विकास हुआ जिसे आलोचना की मार्क्सवादी विचारधारा से जाना गया।

मार्क्स और एंगेल्स के विचारों को आधार बनाकर मार्क्सवादी विचारधारा का सूत्रपात हुआ। अतः साहित्य और समाज की नवीन प्रगतिशील विचारधारा का सूत्रपात हुआ। अतः साहित्य और समाज की नवीन प्रगतिशील दृष्टिकोण से व्याख्या की गई। अतः अध्ययन पद्धति रचना को ऐतिहासिक भौतिकवादी परिप्रेक्ष्य में समझने का प्रयास करती है। इनके अनुसार मनुष्य का सामाजिक जीवन उसकी आर्थिक, राजनैतिक और भौगोलिक परिस्थितियों के अनुसार होता है।

मार्क्सवादी अध्ययन पद्धति से पहले भक्तिकाल को सदैव उसके धार्मिक परिप्रेक्ष्य के रूप में देखने का प्रयास किया जाता रहा है। सर्वप्रथम बार हिन्दी मार्क्सवादी आलोचकों ने उसे सामाजिक और ऐतिहासिक भौतिकवाद के द्वन्द्वात्मक परिप्रेक्ष्य में देखने एवं समझने का प्रयास किया।

''प्रगतिशील आन्दोलन के काल में साहित्य और समाज के संबंध, समाज के विकास में साहित्य की भूमिका और साहित्य की सार्थकता के बारे में जो नया दृष्टिकोण विकसित हुआ उससे भक्ति साहित्य के नए मूल्यांकन की संभावना बनी। डॉ. रामविलास शर्मा ने भक्ति आन्दोलन और उसके काव्य के सामाजिक–सांस्कृतिक आधार को स्पष्ट करते हुए उसके सामंतवाद विरोधी रूप और मानववादी स्वर को रेखांकित किया है।

मार्क्सवादी दृष्टि से 'तुलसी–साहित्य' का पुनर्मूल्यांकन करने में डॉ. रामविलस शर्मा का एक महत्वपूर्ण योगदान रहा है। जो

आलोचक वर्तमान को व्याख्यायित करते समय अपनी प्राचीन परंपरा को पूरी तरह खारिज करके दूसरी परंपरा की खोज में अपने समय की व्याख्या करते हैं। वह पूरी तरह हिन्दी साहित्य को उसके ऐतिहासिक परिप्रेक्ष्य में नहीं समझ पाते। ऐसी स्थिति में डॉ. रामविलास शर्मा का 'परम्परा का मूल्यांकन' करना कितना महत्वपूर्ण है। इसे हम सब भलीभाँति समझ सकते हैं।

डॉ. रामविलास शर्मा के मत से– ''इतिहास के ज्ञान से ही ऐतिहासिक भौतिकवाद का विकास होता है, साहित्य की परम्परा के ज्ञान से ही प्रगतिशील आलोचना का विकास होता है, ऐतिहासिक भौतिकवाद के ज्ञान से समाज में व्यापक परिवर्तन किए जा सकते हैं, और नई समाज–व्यवस्था का निर्माण किया जा सकता है। प्रगतिशील आलोचना के ज्ञान से साहित्य की धारा मोड़ी जा सकती है और नये प्रगतिशील साहित्य का निर्माण किया जा सकता है।''[1]

इसी भाँति डॉ. शिव कुमार मिश्र की पुस्तक 'भक्ति आंदोलन और भक्ति काव्य' सम्पूर्ण भक्तिकाव्य को मार्क्सवादी दृष्टि से इतनी समग्रता में विश्लेषित करने वाली हिन्दी की संभवतः पहली पुस्तक है। इसमें भक्तिकाल के जीवन्त और मृत तत्वों को अलगाया गया है और कहा गया है कि उसके जीवन्त तत्व हमारे आज के जीवन के लिए भी सार्थक और प्रेरक है। इसके विपरीत उसके रूढ़ तत्वों का इस्तेमाल और प्रचार वह तबका करता है जो प्रतिगामी और पुनरुत्थानवादी हैं। भक्तिकाव्य का एक पक्ष लोकवादी और प्रगतिशील है।[2]

इसी तरह प्रो० मैनेजर पाण्डेय ने अपनी पुस्तक 'भक्ति आन्दोलन और सूरदास का काव्य' में सूर–काव्य को किसान–जीवन से जोड़कर देखने की बात कही है। इस प्रकार हम देखते हैं कि साहित्य में मार्क्सवादी अध्ययन पद्धति भी अभिगम के रूप में साहित्य को समझने और देखने की एक नवीन दृष्टि प्रदान करती है।

साहित्य के अध्ययन में अस्तित्ववादी विचारधारा का भी अपना विशेष महत्व है। इस विचारधारा के सूत्रपात पाश्चात्य विचारकों सोरेन, कीर्केगाद, पास्कल आदि में दिखाई देता है। देश में प्रथम विश्वयुद्ध और द्वितीय विश्वयुद्ध के पाश्चात्य मनुष्य की विसंगत स्थिति, महानगरों की भीड़ तथा पारिवारिक संबंधों में मनुष्य की विसंगति स्थिति, महानगरों की भीड़ तथा पारिवारिक संबंधों में मनुष्य के अकेलापन, अजनवीपन तथा संत्रास का वर्णन कविता, कहानी तथा उपन्यासों में दिखाई देता है। अज्ञेय का उपन्यास 'अपने अपने अजनबी', धर्मवीर भारती का काव्य नाटक 'अंधायुग' तथा मोहन राकेश का नाटक 'आधे–अधूरे' अस्तित्ववादी चिंतन से प्रभावित कहे जा सकते हैं।

अतः इस प्रकार हम कह सकते हैं कि अस्तित्ववादी अध्ययन पद्धति भी साहित्य के अभिगम रूप में सहायक है। आधुनिक हिन्दी कविता के नए कवियों श्रीकान्त वर्मा, कैलास वाजपेयी, सर्वेश्वर दयाल सक्सेना, राजकमल चौधरी, लक्ष्मीकान्त वर्मा, जगदीश गुप्त, धर्मवीर भारती, अज्ञेय, विजयदेव नारायण साही आदि की कविताओं को समझने में यह अभिगम अध्ययन पद्धति सहायक सिद्ध हुई है।

साहित्य को समझने की मनोविश्लेषणात्मक अध्ययन पद्धति भी रही है। सर्वप्रथम बार आचार्य रामचन्द्र शुक्ल ने 'रामचरितमानस' में सभी पात्रों का मनोविश्लेषणात्मक दृष्टि से चरित्र–चित्रण किया।

आचार्य रामचन्द्र शुक्ल ने 'रामचरितमानस' में पात्रों का चरित्र–चित्रण उनकी अन्तः प्रवृत्तियों के आधार पर किया। उससे पहले वे पाते हैं कि– ''चारण काल के चन्द कवियों ने भी प्रबन्ध रचना की है, पर उसमें चरित्र–चित्रण को वैसा स्थान नहीं दिया गया है वीरोल्लास ही प्रधान है।''[3]

आचार्य रामचन्द्र शुक्लशील को एक भाव विशेष की दशा कहकर और भाव–दशा को चरित्र–चित्रण का आधार मानकर उसे रस सीमा के अन्तर्गत ले लेते हैं। तब वह पात्रों का अन्तः प्रवृत्तियों से विश्लेषण करते हैं।

कृष्णदत्त पालीवाल के मत से– ''भारतीय साहित्य शास्त्र में 'रस' को काव्य का प्राण मानकर 'चरित्र–चित्रण' के व्यक्तिगत वैशिष्ट्य को नकार दिया गया। उसे शास्त्र के क्षेत्र का गहन विवेचन न प्राप्त हो सका। शुक्ल जी ने 'शील–निरूपण एवं चरित्र–चित्रण' में इस दृष्टि से एक नया अध्याय जोड़ा जिसमें उन्होंने पाश्चात्य मनोविज्ञान का पूरा उपयोग किया। 'चरित्र–चित्रण' को एक व्यापक सिद्धान्त–कला में निबद्ध कर दिया।''[4]

आचार्य रामचन्द्र शुक्ल ने हमें इस बात से अवगत कराया कि तुलसी ने अपने पात्रों के मन को मनोवैज्ञानिक दृष्टि से जाँच परख कर ही उसका विश्लेषण अपने काव्य में किया। पहले पात्रों या नायिकाओं की बाहरी वेशभूषा एवं उनके हाव–भाव का ही चित्रण मिलता है, परन्तु आचार्य रामचन्द्र शुक्ल पात्रों के आन्तरिक मन का भी विश्लेषण करते हैं। पात्रों के चरित्र–चित्रण का मनोवैज्ञानिक विश्लेषण हिन्दी आलोचना के क्षेत्र में एक बहुत बड़ी उपलब्धि थी जिसे आचार्य रामचन्द्र शुक्ल ने पाश्चात्य समीक्षकों की विचारधारा से ग्रहण किया था।

साहित्य के इस मनोवैज्ञानिक रूपी अभिगम के महत्व को नकारा नहीं जा सकता, क्योंकि आगे चलकर हम देखते हैं कि यह पद्धति साहित्य को समझने और उसके अध्ययन में सहायक सिद्ध हुई है। अज्ञेय के उपन्यास 'शेखर एक जीवनी', इलाचन्द्र जोशी का 'जहाज का पक्षी' और जैनेन्द्र का 'त्यागपत्र', 'सुनीता', 'परख' इत्यादि रचनाओं को समझने के लिए मनोवैज्ञानिक अभिगम का विशेष महत्व रहा है।

साहित्य अध्ययन के अभिगम में आधुनिकतावाद और उत्तर–आधुनिकतावाद सिद्धान्त–पद्धतियाँ सहायक रही हैं। आधुनिकतावाद एक आन्दोलन या प्रवृत्ति के रूप में कलात्मक अभिव्यक्तियों, ललित कला, वास्तु–कला, नृत्य, संगीत तथा साहित्यिक कृतियों और सिद्धान्तों के संदर्भ में प्रयुक्त हुआ है। यही कारण है कि इसे साहित्य और कला में एक महत्वपूर्ण आंदोलन के रूप में देखा गया। परंपरा और शास्त्रीयता से अलग नए–नए प्रयोग और नवीनता पर कवियों का ध्यान गया जिसे हम अज्ञेय की कविता के काव्य–शिल्प में आसानी से देख सकते हैं। उन्होंने शब्दों का नए ढंग से प्रयोग किया, नए प्रतीकों, नये बिम्बों की तलाश उनकी कविताओं में दिखाई देती है।

ये उपमान मेले हो गये हैं,
देवता इन प्रतीकों के कर गये हैं कूच।
कभी वासन अधिक घिसने से मुलम्मा छुट जाता।''[5] (अज्ञेय ग्रंथालवी)

इसी प्रकार 'क्रौंच' पक्षी का प्रयोग कविता में प्रेम और वियोग के रूप में किया है परन्तु अज्ञेय ने पहली बार इस संदर्भ को तोड़ा और कहाः–

''क्रौंच बैठा हो कभी वल्मीक पर
तो मत समझ
वह अनुष्टुप बांचता है संगिनी के स्मरण के
जान ले, वह दीमकों की टोह में है।''[6](अज्ञेय ग्रंथावली)

इसीलिए सुप्रसिद्ध आधुनिकतावादी कवि ऐज़रा पाऊंड ने कहा हैः– ''अच्छी कविता कभी भी बीस वर्ष पुरानी शैली में नहीं लिख जा सकती।''

साहित्य के विभिन्न संदर्भ को समझने एवं देखने परखने के लिए उत्तर–आधुनिकतावादी सिद्धान्त एक नवीन दृष्टिकोण प्रदान करता है। इसके केन्द्र में एक भोगवादी संस्कृति है। इसका साहित्य–चिंतन तथा सिद्धान्त पर गहरा प्रभाव पड़ा है। अभिजात्य वर्ग द्वारा रचित साहित्यिक कृतियों को वह स्वीकार नहीं करता। जिन कृतियों को बौद्धिक, सांस्कृतिक तथा सौन्दर्यात्मक तौर पर विशिष्ट माना गया है यदि उनका विखण्डन करें तो पाठ के भीतर मौजूद उप–पाठों और भाषा के पीछे छिपी अभिजात्य विचारधारा और संवेदना स्पष्ट दिखाई देने लगती। जिसके कारण अल्प–समूहों के साहित्य को नज़र अंदाज किया गया है।

उत्तर–आधुनिकतावाद कई वैचारिक पद्धतियों का साहित्यिक चिंतन पर प्रभाव है। नव–इतिहासवाद, साँस्कृतिक अध्ययन, सबार्ल्टन अध्ययन तथा नारीवाद, दलितवाद इसी की देन है।

अतः निष्कर्षतः रूप में कहा जा सकता है कि हर युग की अपनी कुछ खास विशेषता और महत्व होता है। जिसका प्रभाव उस काल की रचनाओं में विभिन्न कलात्मक अभिव्यक्तियों के माध्यम से दिखाई देता है। जिस कारण हर युग का कवि अपने समय के समाज से सामाजिक, राजनैतिक और आर्थिक स्तर पर प्रभावित होता है। ऐसा रचनाकार ही एक युगदृष्टा कहलाता है। जैसे–जैसे समाज की राजनैतिक, सामाजिक और आर्थिक परिस्थितियों में परिवर्तन आता जाता है वैसे–वैसे उस युग की रचनाओं की अभिव्यक्ति के स्वर में भी परिवर्तन आता जाता है।

अतः साहित्य को इन विभिन्न काल संदर्भों में समझने के लिए समय–समय पर कई विचारधारा, सिद्धान्त और विभिन्न अध्ययन पद्धतियों का सहारा लिया जाता रहा है। यही सिद्धान्त एवं विभिन्न अध्ययन पद्धतियाँ ही साहित्य को समझने में नवीन दृष्टिकोण का विकास करते हैं। यही साहित्य को समझने का अभिगम है। बिना इस अभिगम के साहित्य को नहीं समझा जा सकता, क्योंकि साहित्य की सार्थकता और उसका मूल्यांकन अभिगम से ही सिद्ध होता है। अभिगम ही साहित्य की कसौटी है।

संदर्भ और सहायक ग्रंथ

1.डॉ. रामविलास शर्मा–परंपरा का मूल्यांकन, पृ. 9
2.डॉ. मैनेजर पाण्डेय–भक्ति आन्दोलन और सूरदास काव्य, (भूमिका से)
3.आचार्य रामचन्द्र शुक्ल–गोस्वामी तुलसीदास, पृ. 71–72
4.कृष्णदत्त पालीवाल–आचार्य रामचन्द्र शुक्ल का चिंतन जगत, पृ. 220
5.अज्ञेय ग्रन्थावली–6
6.अज्ञेय ग्रन्थावली–6

प्रेमवती
नॉन कॉलेज , गुरु गोविन्द सिंह कॉलेज ऑफ कॉमर्स , दिल्ली विश्वविद्यालय, नई दिल्ली .

Publish Research Article
International Level Multidisciplinary Research Journal
For All Subjects

Dear Sir/Mam,

We invite unpublished Research Paper,Summary of Research Project,Theses,Books and Book Review for publication,you will be pleased to know that our journals are

Associated and Indexed,India

- International Scientific Journal Consortium
- OPEN J-GATE

Associated and Indexed,USA

- EBSCO
- Index Copernicus
- Publication Index
- Academic Journal Database
- Contemporary Research Index
- Academic Paper Databse
- Digital Journals Database
- Current Index to Scholarly Journals
- Elite Scientific Journal Archive
- Directory Of Academic Resources
- Scholar Journal Index
- Recent Science Index
- Scientific Resources Database
- Directory Of Research Journal Indexing

Golden Research Thoughts
258/34 Raviwar Peth Solapur-413005,Maharashtra
Contact-9595359435
E-Mail-ayisrj@yahoo.in/ayisrj2011@gmail.com
Website : www.aygrt.isrj.net